

राजा भोज का सपना  
राजा शिवप्रसाद सितारे-हिंद

वह कौन-सा मनुष्य है जिसने महा प्रतापी राजा भोज महाराज का नाम न सुना हो। उसकी महिमा और कीर्ति तो सारे जगत में व्याप रही है और बड़े-बड़े महिपाल उसका नाम सुनते ही कांप उठते थे और बड़े-बड़े भूपति उसके पांव पर अपना सिर नवाते। सेना उसकी समुद्र की तरंगों का नमूना और खजाना उसका सोने-चांदी और रत्नों की खान से भी दूना। उसके दान ने राजा करण को लोगों के जी से भुलाया और उसके न्याय ने विक्रम को भी लजाया। कोई उसके राजभर में भूखा न सोता और न कोई उघाड़ा रहने पाता। जो सत्तू मांगने आता उसे मोतीचूर मिलता और जो गजी चाहता उसे मलमल दिया जाता। पैसे की जगह लोगों को अशरफियां बांटता और मेह की तरह भिखारियों पर मोती बरसाता। एक-एक श्लोक के लिए ब्राह्मणों को लाख-लाख रुपया उठा देता और एक-एक दिन में लाख-लाख गौ दान करता। सवा लाख ब्राह्मणों को षट्-रस भोजन कराके तब आप खाने को बैठता। तीर्थयात्रा-स्नान-दान और व्रत-उपवास में सदा तत्पर रहता। बड़े-बड़े चांद्रायण किये थे और बड़े-बड़े जंगल-पहाड़ छान डाले थे। एक दिन शरद ऋतु में संध्या के समय सुंदर फुलवाड़ी के बीच स्वच्छ पानी के कुंड के तीर में कुमुद और कमलों के बीच जल-पक्षी कलोलें कर रहे थे। रत्नजटित सिंहासन पर कोमल तकिये के सहारे से स्वस्थ-चित्त बैठा हुआ महलों की सुनहरी कलसियां लगी हुई संगमरमर की गुम्जियों के पीछे से उदय होता हुआ पूर्णिमा का चांद देख रहा था और निर्जन एकांत होने के कारण मन ही मन में सोचता कि अहो! मैंने अपने कुल को ऐसा प्रकाश किया जैसे सूर्य से इन कमलों का विकास होता है, क्या मनुष्य और क्या जीव-जंतु मैंने अपना सारा जन्म इन्हीं के भला करने में गंवाया और व्रत-उपवास करते-करते अपने फूल से शरीर को कांटा बनाया। जितना मैंने दान दिया उतना तो कभी किसी के ध्यान में भी न आया होगा। जि-जिन तीर्थों की मैंने यात्रा की वहां कभी पंछी ने पर भी न मारा होगा। मुझसे बढ़कर इब इस संसार में और कौन पुण्यात्मा है और आगे भी कौन हुआ होगा। जो मैं ही कृतकार्य नहीं तो फिर कौन हो सकता है? मुझे अपने ईश्वर पर दावा है, वह मुझे अवश्य अच्छी गति देगा। ऐसा कैसे हो सकता है कि मुझे भी कुछ दोष लगे। इसी अर्से में चोबदार पुकारा चौधरी इंद्रत्त निगाह रूबरू श्री महाराज सलामत। भोज ने आंख उठाई, दीवान ने साष्टांग दंडवत् की फिर सम्मुख आ हाथ जोड़ यों निवेदन किया। पृथ्वीनाथ, वह कूं सड़क पर, जिनके वास्ते आपने हुक्म दिया था, बनकर तैयार हो गए और आम के बाग भी सब जगह लग गए। जो पानी पीता है, आपको असीस देता और जो उन

पेड़ों की छाया में विश्राम करता है, आपकी बढ़ती दौलत मनाता है। राजा अति प्रसन्न हुआ और कहा कि सुन, मेरी अमलदारी भर में जहां-जहां सड़क है, कोस-कोस पर कूप खुदवा के सदवर्त बैठा दे और दुतरफा पेड़ भी जल्द लगवा दे। इसी अर्से में दानाध्यक्ष ने आकर आशीर्वाद दिया और निवेदन किया कि घर्मावतार, वह जो पांच हजार ब्राह्मण हर साल जाड़ों में रजाई पाते हैं सो डेवढी पर हाजिर हैं। राजा ने कहा, अब पांच के बदले पचास हजार को मिला करे और रजाई की जगह शाल-दुशाला दिया जावे दानाध्यक्ष दुशालों के लाने के वास्ते तोशेखाने में गया। इमारत के दारोगा ने आकर मुजरा किया और खबर दी कि महाराज, वह बड़ा मंदिर जिसके जल्द बना देने के वास्ते सरकार से हुक्म हुआ है आज उसकी नेव खुद गई, पत्थर गढ़े जाते हैं और लुहार लोहा भी तैयार कर रहे हैं। महाराज ने तिउरियां बदलकर उस दारोगा को खूब घुरका और कहा कि मूर्ख, वहां पत्थर और लोहे का क्या काम है ! बिल्कुल मंदिर संगमरमर और संगमूसा से बनाया जावे और लोहे बदल उसमें सब जगह सोना काम में आवे जिसमें भगवान भी उसे देखकर प्रसन्न हो जावे मेरा नाम इस संसार में अतुल कीर्ति पावे। यह सुनकर सारा दरबार पुकार उठा कि धन्य महाराज, धन्य, क्यों न हो, जब ऐसे हो तब तो ऐसे हो, आपने इस कलिकाल को सत्ययुग बना दिया मानो धर्म का उद्धार करने को इस जगत में अवतार लिया। आज आपसे बढ़कर और दूसरा कौन ईश्वर का प्यारा है। हमने तो पहले से ही आपको साक्षात धर्मराज विचारा है। व्यास जी ने कथा आरंभ की, भजन-कीर्तन होने लगा। चांद सिर पर चढ़ आया, घड़ियाली ने निवेदन किया कि महाराज रात आधी के निकट पहुंची। राजा की आंखों में नींद छा रही थी, व्यास जो कथा कहते थे पर राजा को ऊंध आती थी। उठकर रनवास में गया, जड़ाऊ पलंग और फूलों की सेज पर सोई रानियां पैर दाबने लगीं राजा की आंख झपक गयी तो स्वप्न में क्या देखता है कि वह बड़ा संगमरमर का मंदिर बनकर बिल्कुल तैयार हो गया। जहां कहीं उस पर नक्काशी का काम किया है तो बारीकी और सफाई में हाथी दांत को भी मात कर दिया है, जहां कहीं पच्चीकारी का हुनर दिखलाया है तो जवाहिरों को पत्थरों में जड़कर तसवीर का नमूना बना दिया है, कहीं लालों के गुल्लालों पर नीलम की बुलबुलें बैठी हैं और ओस की जगह हीरों के लोलक लटकाए हैं, कहीं पुखराजों की डंडियों से पन्ने के पत्ते निकालकर मोतियों के भुटटे लगाए हैं, सोने की चोबों पर कमखाब के शामियाने और उनके नीचे बिल्लौर के हौजों में गुलाब और केवड़े के फुहारे छूट रहे हैं, मनो धूप जल रहा है, सैंकड़ों कपूर के दीपक बल रहे हैं। राजा देखते ही मारे घमंड के फूलकर मशक बन गया। कभी नीचे, कभी ऊपर, कभी दहने, कभी बायें निगाह करता और मन में सोचता कि क्या अब इतने पर भी मुझे कोई स्वर्ग में से रोकेगा या पवित्र पुण्यात्मा न कहेगा? मुझे अपने कर्मों का भरोसा है, दूसरे किसी से क्या काम पड़ेगा। इसी अर्से में वह राजा उस सपने के मंदिर में

खड़ा-खड़ा क्या देखता है कि एक जोत-सी उसके सामने आसमान से उतरी चली आती है, उसका प्रकाश तो हजारों सूर्य से भी अधिक है परंतु जैसे सूरज को बादल घेर लेता है इस प्रकार उसने मुंह पर घूंघट डाल लिया है नहीं तो राजा की आंखें कब उस पर ठहर सकती थीं वरन् इस घूंघट पर भी मारे चकाचौंध के झपकी चली जाती थीं। राजा उसे देखते ही कांप उठा और लड़खड़ाती-सी जुबान से बोला कि हे महाराज, आप कौन हैं और मेरे पास किस प्रयोजन से आये हैं। उस दैवी पुरुष ने बादल की गरज के समान गंभीर उत्तर दिया कि मैं सत्य हूँ, मैं अंधों की आंखें खोलता हूँ, मैं उनके आगे से धोखे की पट्टी हटाता हूँ, मैं मृगतृष्णा के भटके हुआँ का भ्रम मिटाता हूँ और सपने के भूले हुआँ को नींद से जगाता हूँ, हे भोज, यदि कुछ हिम्मत रखता है तो आ, हमारे साथ आ और हमारे तेज के प्रभास से मनुष्यों के मन के मंदिरों का भेद ले, इस समय हम तेरे ही मन को जांच रहे हैं। राजा के जी पर एक अजब दहशत-सी छा गई। नीची निगाहें करके गर्दन खुजाने लगा। सत्य बोला, भोज, तू डरता है, तुझे अपने मन का हाल जानने में भी भय लगता है। भोज ने कहा कि नहीं इस बात से तो नहीं डरता क्योंकि जिसने अपने तई नहीं जाना उसने फिर क्या जाना सिवाय इसके मैं तो आप चाहता हूँ कि कोई मेरे मन की थाह लेवे और अच्छी तरह से जांचे। मारे व्रत और उपवासों के मैंने अपना फूल सा शरीर कांटा बनाया, ब्राह्मणों को दान-दक्षिणा देते-देते सारा खजाना खाली कर डाला, कोई तीर्थ बाकी न रखा, कोई नदी या तालाब नहाने से न छोड़ा। ऐसा कोई आदमी नहीं है जिसकी निगाह मैं में पवित्र पुण्यात्मा न ठहरूं। सत्य बोला, ठीक, पर भोज, यह तो बतला कि तू ईश्वर की निगाह में क्या है। क्या हवा में बिना धूप तृसरेणु कभी दिखलायी देते हैं? पर सूरज की किरण पड़ते ही कैसे अनगिनत चमकने लग जाते हैं, क्या कपड़े से छाने हुए मैले पानी में किसी को कीड़े मालूम पड़ते हैं पर जब खुर्दबीन शीशे को लगाकर देखो तो एक-एक बूंद में हजारों ही जीव सूझने लग जाते हैं। बस जो तू उस बात के जानने से जिसे अवश्य जानना चाहिए डरता नहीं तो आ, मेरे साथ आ, मैं तेरी आंखें खोलूंगा। निदान सत्य यह कहके राजा को मंदिर के उस बड़े ऊंचे दरवाजे पर चढ़ा ले गया कि जहां से सारा बाग दिखलाई देता था और फिर उससे यों कहने लगा कि भोज, मैं अभी तेरे पापकर्मों का कुछ भी चर्चा नहीं करता क्योंकि तूने अपने तई निरा निष्पाप समझ रखा है पर यह तो बतला कि तूने पुण्यकर्म कौन-कौन से किये हैं कि जिनसे सर्व शक्तिमान जगदीश्वर संतुष्ट होगा। राजा यह सुनके अत्यंत प्रसन्न हुआ, यह तो मानो उसके मन की बात थी। पुण्यकर्म के नाम से उसके चित्त को कमल सा खिला दिया। उसे निश्चय था कि पाप तो मैंने चाहे किया हो चाहे न किया हो पर पुण्य मैंने इतना किया कि भारी से भारी पाप भी उसके पासंग में न ठहरेगा। राजा को वहां उस समय सपने में तीन पेड़ बड़े ऊंचे-ऊंचे अपनी आंख के सामने दिखायी दिये, फलों से इतने

लदे हुए कि मारे बोझ के उनकी टहनियां धरती तक झुक गयी थीं। राजा उन्हें देखते ही हरा हो गया और बोला कि सत्य, यह ईश्वर की भक्ति और जीवों की दया अर्थात् ईश्वर और मनुष्य दोनों की प्रीति के पेड़ हैं। देख फलों के बोझ से धरती पर नपे जाते हैं। यह तीनों मेरे ही लगाये हैं। पहिले में तो यह सब लाल-लाल फल मेरे दान से लगे हैं। और दूसरे में वह पीले मेरे न्यास से और तीसरे में यह सब सफेद फल मेरे तप का प्रभाव दिखलाते हैं। मानो उस समय चारों ओर से यह ध्वनि राजा के कान में चली आती थी कि धन्य हो महाराज, धन्य हो, आज तुम सा पुण्यात्मा दूसरा कोई नहीं। तुम साक्षात् धर्म के अवतार हो। इस लोक में भी तुमने बड़ा पद पाया है और उस लोक में भी तुम्हें इससे अधिक मिलेगा। तुम मनुष्य और ईश्वर दोनों की आंखों में निर्दोष और निष्पाप हो। सूर्य के मंडल में लोग कलंक बतलाते हैं पर तुम पर एक छींटा भी नहीं लगाते। सत्य बोला कि भोज, जब मैं इन पेड़ों के पास से आया था जिन्हें तू ईश्वर की भक्ति और जीवों की दया के बतलाता है तब तो उनमें फल-फूल कुछ भी नहीं था, निरे टूठ से खड़े थे, यह लाल, पीले और सफेद फल कहां से आ गये ! यह सचमुच उन पेड़ों में फल लगे हैं या तुझे फुसलाने और खुश करने को किसी ने उनकी टहनियों से लटका दिये हैं? चल उन पेड़ों के पास चलकर देखें तो सही मेरी समझ में तो यह लाल-लाल फल जिन्हें तू अपने दान के प्रभाव से लगे बतलाता है, यश और कीर्ति फैलाने की चाह अर्थात् प्रशंसा पाने की इच्छा ने इस पेड़ में लगाए हैं। निदान जो हो, सत्य ने उस पेड़ को छूने को हाथ बढ़ाया। राजा सपने में क्या देखता है कि वह सारे फल जैसे आसमान से ओले गिरते हैं, एक आन की आन में धरती पर गिर पड़े। धरती सारी लाल हो गयी। पेड़ों पर सिवाय पत्तों के और कुछ न रहा। सत्य ने कहा कि राजा, जैसे कोई किसी चीज को मोम से चिपकाता है उसी तरह तूने अपने भुलाने को, प्रशंसा पाने की इच्छा से यह फल इस पेड़ पर लगा दिये थे, सत्य के तेज से वहां मोम गल गया, पेड़ टूठ का टूठ रह गया। जो कुछ तूने दिया और किया सब दुनिया के दिखलाने और मनुष्यों से प्रशंसा पाने के लिये। केवल ईश्वर की भक्ति और जीवों की दया से तो कुछ भी नहीं दिया। यदि कुछ दिया हो या किया हो तो तू ही क्यों नहीं बतलाता। मूर्ख इसी के भरोसे पर तू फूला हुआ स्वर्ग में जाने को तैयार हुआ था ! भोज ने एक ठंडी सांस ली। उसने तो औरों को भूला समझा था पर वह सबसे अधिक भूला हुआ निकला। सत्य से उस पेड़ की तरफ हाथ बढ़ाया जो सोने की तरह चमकते पीले-पीले फलों से लदा हुआ था। सत्य का हाथ पास पहुंचते ही इसका भी वही हाल हो गया जो पहले का हुआ था। सत्य बोला कि राजा, इस पेड़ में ये फल तूने अपने भुलाने को। स्वर्ग को यथार्थ सिद्ध करने की इच्छा से लगा लिये थे। कहने वाले ने ठीक कहा है कि मनुष्य-मनुष्य के कर्मों से उसके मन की भावना का विचार करता है और ईश्वर मनुष्य के मन की भावना

के अनुसार उसके कर्मों का हिसाब लेता है। तू अच्छी तरह जानता है कि यही न्याय तेरे राज्य की जड़ है। जो न्याय न करे तो फिर वह राज्य तेरे हाथ में क्योंकर रह सके। िज राज्य में न्याय नहीं वह तो वे नींव का घर है बुढ़िया के दांतों की तरह हिलता है अब गिरा तब गिरा। मूर्ख तू ही क्यों नहीं बतलाता कि यह तेरा न्याय स्वार्थ सिद्ध करने और सांसारिक सुख पाने की इच्छा से है अथवा ईश्वर की भक्ति और जीवों की दया से। भोज की पेशानी पर पसीना हो आया आंखें नीची कर लीं जवाब कुछ न बन पड़ा। तीसरे पेड़ की पारी आयी। सत्य का हाथ लगते ही उसकी भी वही हालत हुई। राजा अत्यंत लज्जित हुआ। सत्य ने कहा कि मूर्ख यह तेरे तप के फल कदापि नहीं इनको तो इस पेड़ पर तेरे अहंकार ने लगा रखा था। वह कौन सा व्रत वा तीर्थयात्रा है जो तूने निहंकार केवल ईश्वर की भक्ति और जीवों की दया से किया हो ! तूने यह तप इसी वास्ते किया कि जिसमें तू अपने तई औरों से अच्छा और बढ़ के विचारे। ऐसे ही तप पर गोबर-गणेश तू स्वर्ग मिलने की उमेद रखता है पर यह तो बतला कि मंदिर की उन मुंडेरों पर वे जानवर से क्या दिखलायी देते हैं? कैसे सुंदर और प्यारे मालूम होते हैं ! पर तो उनके पन्ने के हैं और गर्दन फीरोजे की दुम में सारे किस्म के जवाहिर जड़ दिये हैं। राजा के जी में घमंड की चिड़िया ने फिर फुरफुरी ली मानो बुझते हुए दिये की तरह जगमगा उठा। जल्दी से जवाब दिया कि हे सत्य यह जो कुछ तू मंदिर की मुंडेरों पर देखता है मेरे संध्या-वंदन का प्रभाव है। मैंने जो रातों जाग-जागकर और माथा रगड़ते-रगड़ते इस मंदिर की देहली को घिसाकर ईश्वर की स्तुति-वंदना और विनती प्रार्थना की है वही अब चिड़ियों की तरह पंख फैलाकर आकाश को जाती है मानों ईश्वर के सामने पहुंचकर अब मुझे स्वर्ग का राजा बनाती हैं। सत्य ने कहा कि राजा दीनबंधु करुणासागर श्री जगन्नाथ जगदीश्वर अपने भक्तों की विनती सदा सुनता रहता है और जो मनुष्य शुद्ध हृदय और निष्कपट होकर नम्रता और श्रद्धा के साथ अपने दुष्कर्मों का पश्चाताप अथवा उनके क्षमा होने का टुक भी निवेदन करता है वह उसका निवेदन उसी दम सूर्य-चांद को बेधकर पार हो जाता है। फिर क्या कारण कि यह सब आप अब तक मंदिर की मुंडेर ही पर बैठे रहे। आ चल देखें तो सही हम लोगों के पास जाने पर आकाश तो उड़ जाते हैं या उसी जगह पर परकट-कबूतरों की तरह फड़फड़ाया करते हैं। भोज डरा लेकिन सत्य का साथ न छोड़ा। जब मुंडेर पर पहुंचा तो क्या देखता है कि वह सारे जानवर जो दूर से ऐसे सुंदर दिखायी देते थे मरे हुए पड़े हैं पंख नुचे-खुचे और बहुतों बिल्कुल सड़े हुए यहां तक कि मारे बदबू के राजा का सिर भिन्ना उठा। दो एक में जिनमें कुछ दम बाकी था जो उड़ने का इरादा भी किया तो उनके पंख पारे की तरह भारी हो गये और उन्हें उसी ठौर दबा रक्खा तड़फा जरूर किये पर उड़ने जरा भी न दिया। सत्य बोला भोज बस यही तरे पुण्यकर्म हैं। इन्हीं स्तुति-वंदना और विनती-प्रार्थना के भरोसे पर तू स्वर्ग

में जाना चाहता है! सूरत तो इनकी बहुत अच्छी है पर जान बिल्कुल नहीं। तूने जो कुछ किया केवल लोगों के दिखलाने को जी से कुछ भी नहीं। जो तू एक बार भी जी से पुकारा होता कि दीनबंधु दीनानाथ दीन-हितकारी मुझ पापी महा अपराधी डूबते हुए को बचा और कृपा-दृष्टि कर तो वह तेरी पुकार तीर की तरह तारों से पास पहुंची होती। राजा ने सिर नीचा कर लिया उत्तर कुछ न बन आया। सत्य ने कहा कि भोज अब आ फिर इस मंदिर के अंदर चलें और वहां तेरे मन के मंदिर को जांचो। यद्यपि मनुष्य के मन के मंदिर में ऐसे-ऐसे अंधेरे तहखाने और तलघर पड़े हुए हैं कि उनको सिवाय सर्वदर्शी घट-घट अंतर्दामी सकल जगत-स्वामी और कोई भी नहीं देख अथवा जांच सकता तो भी तेरा परिश्रम व्यर्थ न जावेगा। राजा उस सत्य के पीछे खिंचा-खिंचा फिर मंदिर के अंदर घुसा पर अब तू उसका हाल ही कुछ से कुछ हो गया। सचमुच सपने का खेल सा दिखायी दिया चांदी की सारी चमक जाती रही सोने की बिल्कुल दमक उड़ गई दोनों में लौ की तरह मोर्चा लगा हुआ और जहां-तहां से मुलम्मा उड़ गया था भीतर ईंट पत्थर कैसा दिखलायी देता था जवाहिरों की जगह केवल काले-काले दाग रह गये थे और संगमरमर की चट्टानों में हाथ-हाथ भर गहरे गढ़े पड़ गये। राजा यह देखकर भैंचक-सा रह गया। औसान जाते रहे हक्का-बक्का बन गया धीमी आवाज से पूछा कि यह टिड्डी दल की तरह इतने दाग इस मंदिर में कहां से आये? जिधर मैं निगाह उठाता हूं सिवाय काले-काले दागों के और कुछ भी नहीं दिखलायी देता ऐसा तो छीपी छींट भी नहीं छापेगा और न शीतला बिगड़ा किसी का चेहरा देख पड़ेगा। सत्य बोला कि राजा ये दाग जो तुझे मंदिर में दिखलायी देते हैं वे दुर्वचन हैं जो दिन-रात तेरे मुख से निकला किये हैं। याद तो कर तूने क्रोध में आकर कैसी कड़ी-कड़ी बातें लोगों को सुनायी हैं। क्या खेल में और क्या आना अथवा दूसरे का चित्त प्रसन्न करने को क्या रुपया बचाने अथवा अधिक लाभ पाने को और दूसरे का देश अपने हाथ में लाने अथवा किसी बराबर वाले से अपना मतलब निकालने और दुश्मनों को नीचा दिखलाने को कितना झूठ बोला है! अपने ऐब छिपाने और दूसरों की आंखों में अच्छा मालूम होने अथवा झूठी तारीफ पाने के लिए कैसी-कैसी शेखियां हांकी हैं! अपने को औरों से अच्छा औरों को अपने से बुरा दिखलाने को कहां तक बातें बनायी हैं तो अब कुछ भी याद नहीं रहा बिल्कुल एकबारगी भूल गया पर वहां वह तेरे मुंह से निकलते ही बही मैं दर्ज हुआ। तू इन दागों को गिनने में असमर्थ है पर उस घटघट निवासी अनंत अविनाशी को एक-एक बात जो तेरे मुंह से निकली है याद है और याद रहेंगी। उसके निकट भूत और भविष्य दोनों वर्तमान सा है। भोज ने सिर न उठाया पर उस दबी जुबान से इतना मुंह से और निकाला कि दाग पर ये हाथ-हाथ भर गढ़े क्योंकर पड़ गये सोने-चांदी में मोर्चा लग कर ये ईंट पत्थर कहां से दिखलायी देने लगे! सत्य ने कहा कि राजा क्या तूने कभी किसी को कोई लगती हुई बात

नहीं कही अथवा बोली-ठोली नहीं मारी? अरे नादान, यह बोली-ठोली तो गोली से अधिक काम कर जाती है। तू तो इन गढ़ों ही को देखकर रोता है पर तेरे ताने तो बहुतों की छातियों से पार हो गये। जब अहंकार का मोर्चा लगा तो फिर यह दिखलावे का मुलम्मा कब तक ठहर सकता है, स्वार्थ और अश्रद्धा का ईंट-पत्थर प्रकट हो आया। राजा को इस अर्से में चिमगादड़ों ने बहुत तंग कर रखा था, मारे बू के सिर फटा जाता था, भनगे और पतंगों से सारा मकान भर गया था। राजा को बीच-बीच में पंख वाले सांप और बिच्छू भी दिखलायी देते थे। राजा घबराकर चिल्ला उठा कि यह मैं किस आफत में पड़ा! इन कमबख्तों को यहां किसने आने दिया? सत्य बोला, राजा, सिवाय तेरे इनको यहां कौन आने देगा! तू ही तो इन सबको लाया है। यह सब तेरे काम की बुरी वासना है। तूने समझा था कि जैसे समुद्र में लहरें उठा और मिटा करती हैं उसी तरह मनुष्य के मन में भी संकल्प की मौज उठकर मिट जाती है। पर रे मूढ़, याद रख कि आदमी के चित्त में ऐसा सोच-विचार कोई नहीं आता तो जगतकर्ता प्राणदाता परमेश्वर के साम्हने प्रतयक्ष नहीं हो जाता। यह चमगादड़ और भनगे और सांप-बिच्छू और कीड़े-मकोड़े जो तुझे दिखलाई देते हैं, संकल्प-विकल्प हैं जो दिन-रात तेरे अंतःकरण में उठा किये और उन्हीं चमगादड़ और भनगे और सांप-बिच्छू और कीड़े-मकोड़ों की तरह तेरे हृदय के प्रकाश में उड़ते रहे। क्या कभी तेरे जी में किसी राजा की ओर से कुछ द्वेष नहीं रहा था? उसके मुल्क-माल पर लोभ नहीं आया था? अपनी बड़ाई का अभिमान नहीं हुआ या दूसरे की सुंदर स्त्री देखकर उस पर दिल न चला। राजा ने एक बड़ी लंबी ठंडी सांस ली और अत्यंत निराश होके वह बात कही कि इस संसार में ऐसा कोई मनुष्य नहीं है जो कह सके कि मेरा हृदय शुद्ध और मन में कुछ भी पाप नहीं। इस संसार में निष्पाप रहना बड़ा कठिन है। जो पुण्य करना चाहते हैं उनमें भी पाप निकल आता है। इस संसार में पाप से रहित कोई भी नहीं। ईश्वर के साम्हने पवित्र पुण्यात्मा कोई भी नहीं। सारा मंदिर वरन सारी धरती, आकाश गूंज उठा, कोई भी नहीं, कोई भी नहीं। सत्य ने जो आंख उठाकर उस मंदिर की एक दीवार की तरफ देखा तो वह उसी संगमर्मर से आयना बन गया। राजा से कहा कि अब टुक इस आइने का भी तमाशा देख और जो कर्तव्य कर्मों के न करने से तुझे पाप लगे हैं उनका भी हिसाब ले। राजा उस आइने में क्या देखता है, िज प्रकार बरसात की बढ़ी हुई किसी नदी के जल के प्रवाह में बहे जाते हैं उस प्रकार अनगिनत सूरतें एक ओर से निकलती और दूसरी ओर अलोप होती चली जाती हैं। कभी तो राजा को वे सब भूखे और नंगे आइने में दिखलायी देते जिन्हें राजा खाने-पहरने को दे सकता था पर न देकर दान का रुपया उन्हीं हट्टे-कट्टे मोटे-मुसटंड खाते-पीते हुआं को देता रहा जो उसकी खुशामद करते थे या किसी की सिफारिश ले आते थे या उसके कारदारों को घूस देकर मिला लेते थे या सवारी के समय मांगते-मांगते और शोर-गुल मचाते-मचाते उसे

तंग कर डालते थे या दरबार में आकर उसे लज्जा के भंवर में गिरा देते थे या झूठा छापा-तिलक लगाकर उसे मकूर के जाल में फंसा लेते थे या जन्मपत्र में भले-बुरे ग्रह बतला कर कुछ धमकी भी दिखला देते थे या सुंदर कवित्त और श्लोक पढ़कर उसके चित्त को लुभाते थे। कभी वे दीन-दुखी दिखलाई देते जिन पर राजा के कारदार जुल्म किया करते थे और उसने कुछ भी उसकी तहकीकात और उपाय न की। कभी उन बीमारों को देखता जिनका चंगा करा देना राजा के इख्तियार में था। कभी वे व्यथा के जले और विपत्ति के मारे दिखलाई देते जिन्हें कदो बात कहने से ठंडा और संतुष्ट हो सकता था। कभी अपने लड़के और लड़कियों को देखता जिन्हें वह पढ़ा-लिखा कर अच्छी-अच्छी बातें सिखा कर बड़े-बड़े पापों से बचा सकता था। कभी उन गांव और इलाकों को देखता जिनमें कूप तालाब खुदवाने और किसानों को मदद देने और उन्हें खेती-बारी की नई-नई तरकीबें बतलाने से हजारों गरीबों का भला कर सकता था। उन टूटे हुए पुल और रास्तों को देखता जिन्हें दुरुस्त करने से वह लाखों मुसाफिरों को आराम पहुंच सकता था। राजा से अधिक देखा न जा सका। थोड़ी ही देर में घबरा कर हाथों से अपनी आंखों को ढाप लिया। वह अपने घमंड में उन सब कामों को तो सदा याद रखता था और उनका चर्चा किया करता जिन्हें वह अपनी समझ में पुण्य के निमित्त किए हुए समझा था पर उन कर्तव्य कामों का कभी टुक सोच न किया जिन्हें अपनी उन्मत्तता से अचेत होकर छोड़ दिया था। सत्य बोली: राजा, अभी से क्यों घबरा गया, आ इधर आ, इस दूसरे आइने में मैं तुझे अब उन पापों को दिखलाता हूँ जो तूने अपनी उमर में किए हैं। राजा ने हाथ जोड़े और पुकारा कि इस महाराज, बस कीजिए, जो कुछ देखा उसी में मैं तो मिट्टी हो गया, कुछ भी बाकी न रहा, अब आगे क्षमा कीजिए। पर यह तो बतलाइये कि आपने यहां आकर मेरे शर्बत में क्यों जहर घोला और पकी-पकाई खीर में सांप का विष उगला और आपने मेरे आनंद को इस मंदिर में आके नाश में मिलाया जिसे मैंने सर्वशक्तिमान् भगवान् के अर्पण किया है, चाहे जैसा वह बुरा और अशुद्ध क्यों न हो पर मैंने तो उसी के निमित्त बनाया है। सत्य ने कहा, ठीक पर यह तो बतला कि भगवान इस मंदिर में बैठा है? यदि तूने भगवान को इस मंदिर में बैठाया होता तो फिर वह अशुद्ध क्यों रहता। जरा आंख उठाकर उस मूर्ति को तो देख जिसे तू जन्म-भर पूजता रहा है। राजा ने आंख उठाई तो क्या देखता है कि वहां उस बड़ी ऊंची वेदी पर उसी की मूर्ति पत्थर की गढ़ी हुई रखी है और अभिमान की पगड़ी बांधे हुए है। सत्य ने कहा कि मूर्ख, तूने जो काम किए केवल अपनी प्रतिष्ठा के लिए। इसी प्रतिष्ठा प्राप्त होने की सदा तेरी भावना रही और इसी प्रतिष्ठा के लिये तूने अपनी आप पूजा की। रे मूर्ख, सकल जगत्स्वामी घटघट अंतर्यामी क्या ऐसे मन रूपी मंदिर में भी अपना सिंहासन बिछने देता है तो अभिमान और प्रतिष्ठा-प्राप्ति की इच्छा इत्यादि से भरा है। ये तो उसकी जली



पड़ने योग्य हैं। सत्य का इतना कहना था कि सारी पृथ्वी एकबारगी कांप उठी मानो उसी दम टुकड़ा-टुकड़ा होना चाहती थी। आकाश में ऐसा शब्द हुआ कि जैसा प्रलय काल का मेघ गरजा। मंदिर की दीवार चारों ओर से अड़अड़ा गिर पड़ी मानों उस पापी राजा को दबा लेना चाहती थी और उस अहंकार की मूर्ति पर ऐसी एक बिजली गिरी कि वह धरती पर औंधें मुंह आ पड़ी। 'त्राहि त्राहि मां में डूबा' कहके भोज जो चिल्लाया, आंख उसकी खुल गई और सपना बना हो गया। इस अर्से में रात बीत कर आस्मान के किनारों पर लाली दौड़ हुई थी। चिड़िया चहचहा रही थी। एक ओर से शीतल मंद सुगंध पवन चली थी दूसरी ओर से बीन और मृदंग की ध्वनि। बंदीजन राजा का जस गाने हर्कारे हर तरफ काम को दौड़े, कमल खिले, कुमुद कुम्हालाये। राजा पलंग से पर जीभारी, माथ थामें हुए। न हवा अच्छी लगती थी न गाने बजाने की सुध-बुध थी। उठते ही पहले यह हुक्म दिया कि इस नगर में जो अच्छे पंडित हों जल्द उसको मेरे पास लाओ, मैंने एक सपना देखा है कि िजस्क अग अ य सारा राग सपना मालूम होता है। उस सपने के स्मरण से ही मेरे रोंगटे खड़े हुए होते हैं। राजा के मुख से हुक्म निकलने की देर थी, चोपदार ने तीन पंडितों को उस समय वशिष्ठ, याज्ञवल्क्य और बृहस्पति के समान प्रख्यात थे, बात-की-बात में राजा के सामने ला खड़ा किया। राजा का मुंह पीला पड़ गया था। माथे पर पसीना हो आया था, पूछा कि वह कौन-सा उपाय है जिससे यह पापी मनुष्य ईश्वर के कोप से छुटकारा पावे। उनमें से एक बड़े बूढ़े पंडित ने आशीर्वाद देकर निवेदन किया कि धर्मराज धर्मावतार, यह भय तो आपके शत्रुओं को होना चाहिए, आपसे पवित्र पुण्यात्मा के जी में ऐसा संदेह क्यों उत्पन्न हुआ? आप अपने पुण्य के प्रभाव का जामा पहन के बे-खटके परमेश्वर के साम्हने जाइए, न तो वह कहीं से फटा-फटा है और न किसी जगह से मैला-कुचैला हुआ है। राजा क्रोध करके बोला कि अस अधिक अपनी वाणी को परिश्रम न दीजिए और इसी दम अपने घर की राह लीजिए। क्या आप फिर उस पर्दे को डालना चाहते हैं जो सत्य ने मेरे साम्हने से हटाया और बुद्धि की आंखों को बंद करना चाहते हैं जिन्हें सत्य ने खोला! उस पवित्र परमात्मा के साम्हने अन्याय कभी नहीं ठहर सकता। मेरे पुण्य का जामा उसके आगे निरा चीथड़ा है। यदि वह मेरे कामनों पर निगाह करेगा तो नाश हो जाऊंगा, मेरा कहीं पता भी न लगेगा। इसी में दूसरा पंडित बोल उठा कि महाराज, परब्रह्म परमात्मा जो आनंद-स्वरूप है, उसकी दया के सागर का कब किसी ने वारापार पाया है! वह क्या हमारे इन छोटे-छोटे कामों पर निगाह किया करता है! एक कृपा-दृष्टि से सारा बेड़ा पार लगा देता है। राजा ने आंखें दिखला के कहा कि महाराज, आप भी अपने घर को सिधारिये, आपने ईश्वर को ऐसा अन्यायी ठहरा दिया कि वह किसी पापी को सजा नहीं देता है, सब धान बाईस पसेरी तोलता है मानो हरभोंगपुर का राज करता है। इसी संसार में क्यों नहीं देख लेते, जो आम बोता है वह आम

खाता है और जो बबूल लगाता है वह कांटे चुनता है, तो क्या उस लोक में जो जैसा करेगा सर्वदर्शी घटघट अंतःर्यामी से उसका बदला वैसा ही न पावेगा? सारी सृष्टि पुकारे कहती है और हमारा अंतःकरण भी इस बात पर गवाही देता है कि ईश्वर अन्याय नहीं करेगा। जो जैसा करेगा वैसा ही उससे उसका बदला पावेगा। अब तीसरा पंडित आगे बढ़ा यों जुबान खोली कि महाराजाधिराज परमेश्वर के यहां से हम लोगों को वैसा ही बदला मिलेगा कि जैसा हम लोग काम करते हैं, इसमें कुछ भी संदेह नहीं। आप यथार्थ फरमाते हैं परमेश्वर अन्याय कभी नहीं करेगा पर यह इतने प्रायश्चित्त और होम और यज्ञ और जप-तप तीर्थयात्रा किस लिए बनाए गए हैं? यह इसीलिए हैं कि जिसमें परमेश्वर हम लोगों का अपराध क्षमा करे और वैकुंठ में अपने पास रहने को ठौर देवे। राजा ने कहा, देवताजी, कल तो मैं आपकी सब बात मान सकता था लेकिन अब तो मुझे इन कामों में भी ऐसा कोई नहीं दिखलाई देता जिसके करने से यह पापी मनुष्य पवित्र पुण्यात्मा हो जावे। वह कौन-सा जप-तप, तीर्थयात्रा, होम-यज्ञ और प्रायश्चित्त है जिसके करने से हृदय शुद्ध हो और अभिमान न आ जावे। आदमी को फुसला लेना तो सहज है पर उस घटघट के अंतःर्यामी को कोई क्योंकर फुसलावे! जब मनुष्य का मन ही पाप से भरा हुआ है तो फिर उससे पुण्यकर्म कोई कहां बन आवे। पहल आप उस स्वप्न को सुनिये जो रात को देखा है तब फिर पीछे वह उपाय बतलाइये जिससे पापी मनुष्य ईश्वर के कोप से छुटकारा पाता है।

निदान राजा ने जो कुछ रात को स्वप्न में देखा था सब जों का जों उस पंडित को कह सुनाया। पंडित जी तो सुनते ही आवाक् हो गये, सिर झुका लिया। राजा ने निराश होकर चाहा कि तुषानल में जल मरे पर एक परदेसी आदमी-सा जो उन पंडितों के साथ बिना बुलाये घुस आया था सोचता-विचारता उठ खड़ा हुआ और धीरे से यों निवेदन किया कि महाराज, हम लोगों का कर्ता ऐसा दीनबंधु कृपासिंधु है कि अपने मिलने की राह पाने की सच्चे जी से मदद मांगिये। हे पाठकजनो, क्या तुम भी भोज की तरह दूढ़ते हो और भगवान् से उसके मिलने की प्रार्थना करते हो? भगवान् तुम्हे शीघ्र ऐसी बुद्धि दे और अपनी राह पर चलावे, यही हमारा अंतःकरण से आशीर्वाद है। जिन दूढ़ा तिन पाइया गहरे पानी पैठ।

(1905)

